शोध मंथन Vol. XIII No.I Jan.-Mar.2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

गजराज सिंह
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग
ईमेलः *gajrajsingh1071988@gmail.com*

प्राप्तिः 05.03.2022
स्वीकृतः 17.03.2022

डॉ० सीमा रानी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा
शिक्षा विभाग
दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय
मुरादाबाद (उ०प्र०)

सारांश

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, वौद्धिक, सांवेगिक चारित्रिक सर्वोत्कृष्ट विकास है। शिक्षा से मात्र सफल जीवन का मापन का ज्ञान ही नहीं होना चाहिए बल्कि शिक्षा के द्वारा शाश्वत मूल्यों का भी पता चलना चाहिए। भले ही वर्तमान काल में शिक्षा प्रणाली बाल केन्द्रित हो गयी हो लेकिन अध्यापक का योगदान आज भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षा प्रणाली का क्रियान्वयन अध्यापक के बिना सम्भव नहीं है। भले ही कार्यक्रमित अनुदेशन के माध्यम से विद्यार्थियों के ज्ञान पक्ष को विकसित किया जा सकता है लेकिन विद्यार्थियों को भावात्मक पक्ष के विकास हेतु आज भी अध्यापक का होना अति महत्वपूर्ण है। यदि शिक्षक की रूचि शिक्षण के प्रति गहरी होगी तो उसके शिष्यों की रूचि भी शिक्षा केप्रति अवश्य होगी। अध्यापकों की योग्यता, रूचि, आस्था, कार्यशैली, विकास, लगन तथा समायोजन आदि पर भी शिक्षण की सफलता निर्भर करती है।

अतः हम कह सकते हैं कि एक सुसमायोजित अध्यापक ही वांछित शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करते हुऐ शिक्षा को उसके वास्तविक लक्ष्य की ओर अग्रसर कर सकता है।

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के नाते वह सामाजिक वातावरण से काफी प्रभावित होता है। पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति के प्रारम्भिक युग में मानव भी अन्य प्राणीयों की भाँति जैविक प्राणी था लेकिन वर्तमान समय में मनुष्य एक व्यवस्थित, उन्नत, सुखमय तथा सामाजिक जीवन व्यतीत कर रहा है। जबकि अन्य प्राणी आज भी पर्यावरण से समायोजन के लिए संघर्ष कर रहे। मनुष्य की उच्च मानसिक, शारीरिक व समायोजन क्षमता में वृद्धि का प्रमुख आधार ज्ञान है, जो उसे उसके पूर्वजों द्वारा एवं स्वयं के प्रयासों द्वारा शिक्षा के माध्यम से मिलता है।

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवनपर्यन्त चलती रहती है। प्रकृित के आधार पर शिक्षा को मुख्यतः दो प्रकार से विभाजित किया जा सकता है औपचारिक शिक्षा तथा अनौपचारिक शिक्षा। औरपचारिक शिक्षा को वर्तमान प्रणाली के आधार पर प्राथमिक माध्यमिक व उच्च शिक्षा में विभाजित किया जाता है। शिक्षा की यह विशाल भव्य इमारत जिस पर आधार शिलाा पर टिकी होती है वह प्राथमिक शिक्षा ही होती है। प्राथमिक शिक्षा जितनी अधिक अच्छी तथा उन्नत होगी व अपने वांछित उद्देश्यों की अधिकतम प्राप्ति करेगी तो माध्यमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा भी क्रमशः अपने वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने में उतनी ही अधिक सफल होगी।

समस्या कथन

''सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों का समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन''

समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

1. **सरकारी प्राथमिक विद्यालय–** कक्षा एक से पाँच तक शिक्षा प्रदान करने वाले वे विद्यालय जिनमें वित्तीय संसाधन (आय, व्यय) मानवीय संसाधन (अध्यापक अन्य अधिकारी व कर्मचारी) भौतिक संसाधन (भवन, फर्नीचर व शिक्षण सामग्री आदि) की व्यवस्था व नियन्त्रण पूर्ण रूपेण राज्य सरकार के अधीन होता है तथा अध्ययनरत विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा पुस्तकें मध्यान्ह भोजन, ड्रेस व छात्रवृत्ति भी सरकार के द्वारा प्रदान की जाती है। इस प्रकार के विद्यालयों का संचालन राज्य सरकार केन्द्र सरकार के सहयोग से करती है तथा इस प्रकार की विद्यालयों के लिए मान्यता बेसिक शिक्षा परिषद से प्राप्त होती है।

2. **निजी प्राथमिक विद्यालय–** कक्षा एक से पाँच तक की शिक्षा प्रदान करने वाली वे संस्थायें जिनका नियमन व संचालन राजकीय अनुदेशों के अन्तर्गत किया जाता है किन्तु स्वामित्व एवं प्रशाशनिक व्यवस्था निजी हाथों में होती है।

3. **प्रशिक्षित अध्यापक–** प्रशिक्षित अध्यापकों से आशय ऐसे अध्यापाकों से जिन्होंने स्नातक उपरान्त शिक्षक प्रशिक्षण विधिवत रूप से प्राप्त किया हो तथा नियमानुसार प्राथमिक विद्यालयों में नियुक्ति पायी हो।

4. **सरकारी अध्यापक–** वे अध्यापक जो विधिवत प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद राजकीय/सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में नियमानुसार नियुक्ति पायी हो।

5. **निजी अध्यापक**– वे अध्यापक जो विधिवत रूप से प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त निजी स्वामित्व वाले प्राथमिक विद्यालयों में नियुक्त हैं।

समयोजन

समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने सुख एवं सफलता की ओर अग्रसर होता है।

''समायोजन व्यक्ति की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा कठिनाइयों के निराकरण के प्रयासों का परिणाम है।'' – कोलमैन

''अच्छा समायोजन वह है जो यर्थात पर आधारित तथा सन्तोष देने वाला होता है।'' – स्मिथ

''समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच सन्तुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।'' – गेट्स व अन्य

समायोजन के क्षेत्र

समायोजन के प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं–

1. गृह समायोजन, 2. शैक्षिक समायोजन, 3. स्वास्थ्य समायोजन, 4. संवेगात्मक समायोजन, 5. सामाजिक समायोजन।

समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक

समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों को उनकी प्रकृति के आधार पर दो भागों में विभाजित कर सकते हैं–

1. वाह्य कारक
2. आन्तरिक कारक

वाह्य कारक के अन्तर्गत पर्यावरण के भौतिक कारक– सामाजिक कारक, आर्थिक कारक राजनैतिक कारक आदि के शामिल किया जाता है।

आन्तरिक कारकों के अन्तर्गत वंशानुक्रम वैयक्ति, आवश्यकतायें लक्ष्य तथा व्यक्ति का नैतिक स्तर को शामिल किया जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों के समायोजन का अध्ययन करना।
2. निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापाकों के समायोजन का अध्ययन करना।
3. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्नाऐं

1. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत व निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित पुरूश अध्यापकों व निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित महिला अध्यापिकाओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित महिला अध्यापिकाओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

जनसंख्या– एक सुनिश्चित व सुपरिभाषित व्यक्तियों, वस्तुओं, घटनाओं व प्रक्रियाओं पर समुच्य को जनसंख्या कहते हैं। अध्ययन हेतु वर्ष 2020–2021 में संचालित सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत विधिवत प्रशिक्षित एवंनियमनुसार नियुक्त समस्त महिला व पुरूष अध्यापक प्रस्तुत अध्ययन में जनंसख्या के रूप में प्रयुक्त होंगे।

न्यादर्श

किसी भी शोधकर्ता में सम्पूर्ण व्यक्ति समूह को अध्ययन में सम्मिलित करना अत्यन्त कठिन कार्य होता है इसलिए शोधार्थी ने अपने मौलिक शोधपत्र में समूह के कुछ ही सदस्यों को चुनकर उन्हीं की जानकारी को सम्पूर्ण समूह के लिए उचित समझा है। इस प्रकार यह प्रतिनिधित्व समूह ही न्यादर्श कहलाता है।

प्रस्तुत शोधपत्र में शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श का चयन वस्तुनिष्ठ, यादृच्छिक सह उद्देश्यपूर्ण रूप से किया गया है। जो सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व कर सके। न्यादर्श में 100 अध्यापकों को चुना गया है जिसमें 50 सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक तथा 50 निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक को शामिल किया गया है।

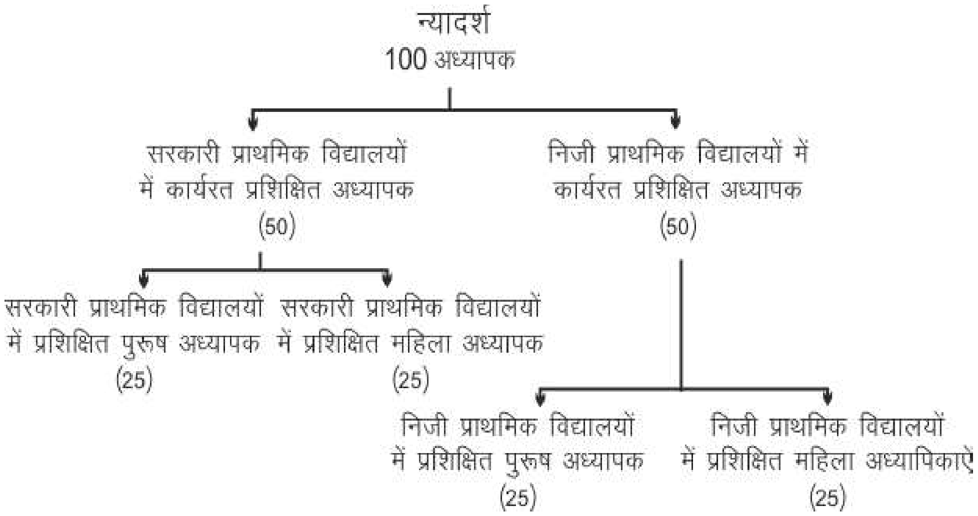

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

न्यादर्श चयन के उपरान्त शोधकर्ता का प्रमुख कार्य तथ्यों के संकलन हेतु विश्वसनीय तथा वैध परिणाम प्राप्त करने के लिए उपकरण का चयन करना अनिवार्य है। किसी भी उपकरण का चयन विभिन्न प्रकार के कारकों पर निर्भर करता है जैसे– अध्ययन के उद्देश्य, उपयुक्त परीक्षण की उपलब्धता, परीक्षण की वैधता, उपयुक्तता एवं विश्वसनीयता आदि। उपलब्ध उपकरणों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात हुआ है कि प्रस्तुत शोधकार्य हेतु वांछित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सम्बन्धित उपकरण उपलब्ध है। अतः प्रदत्तों का संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा **डॉ0 एस0 के0 मंगल** द्वारा निर्मित **अध्यापक समायोजन मापनी** (संक्षिप्त रूप) का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की प्रविधि

प्रस्तुत शोधकार्य में शोध के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुऐ अनुसंधानकर्ता द्वारा शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण उपागम उन समयकों को एकत्रित करने व विश्लेषण करने की विधि है जो एक सुनिश्चित पद्धति का वर्तमान परिस्थितियों के सम्बन्ध में प्रचलित व्यवहारों, विश्वासों, दृष्टिकोण अभिवृत्तों आदि जो स्थापित हैं उन सभी से होता है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधकार्य में आंकड़ों या प्रदत्तों का विश्लेषण शोधकार्य के लिए एक वैज्ञानिक निष्कर्ष पर पहुँचता है तथा परिकल्पना के परीक्षण में सहायक होता है विश्लेषण के अन्तर्गत प्रापत मूल आंकड़ों के द्वारा मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टी परीक्षण मान ज्ञात किया गया है। इसके आधार पर तालिकाओं की सहायता से विश्लेषण को स्पष्ट रूप प्रदान करने का प्रयास किया गया है–

तालिका संख्या– 1

H_1– सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत व निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_1	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापक	52.86	7.91	1.07
निजी प्रथामिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापक	48.10	12.59.	

उपर्युक्त तालिका से परिलक्षित होता है कि टी का परिगणित मान 1.07 है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 मुक्तांश 98.96 पर टी के सारणीयमान से कम है इसलिए शुन्य परिकल्पना स्वीकृत हो जायेगी अर्थात् सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों व निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या– 2

H_2– सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत व निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष अध्यापकों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_2	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित पुरूष अध्यापक	53.12	7.06	1.25
निजी प्रथामिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित पुरूष अध्यापक	49.76	11.38	

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 'टी' का मान 1.25 है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 मुक्तांश 100.88 पर टी के सारणीयमान से कम है इसलिए शुन्य परिकल्पना स्वीकृत हो जायेगी अर्थात् सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों व निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या– 3

H_3– सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित महिला अध्यापकों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_3	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित पुरूष अध्यापक	53.12	7.06	2.16
निजी प्रथामिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित पुरूष अध्यापक	46.44	13.69	

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 'टी' का मान 2.16 है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 मुक्तांश 97.56 पर टी के सारणीयमान से अधिक है इसलिए शुन्य परिकल्पना स्वीकृत हो जायेगी अर्थात् सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों व निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित महिला अध्यापकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या– 4

H_4– सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित महिला अध्यापकों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_4	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित पुरूष अध्यापक	53.12	7.06	0.23
सरकारी प्रथामिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित महिला अध्यापिकाऐं	52.60	8.67	

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन के उपरान्त स्पष्ट होता है कि 'टी' का परिगणित मान 0. 23 है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 मुक्तांश 103.72 पर टी के सारणीयमान से कम है इसलिए शुन्य परिकल्पना स्वीकृत हो जायेगी अर्थात् सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित पुरुष अध्यापक व महिला अध्यापिकाओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधकार्य के अन्तर्गत सरकारी प्राथमिक विद्यालयों व निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष निकला कि दोनों सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों में ही प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

सन्दर्भ

1. Buch, M. B. (1983-1987). “Third Survey of research in education”. New Delhi, NCERT.
2. Buch, M. B. (1988-1992). “Fourth Survey of research in education”. New Delhi, NCERT.
3. Goyal, Dr. Jitendra Singh. (2021). “Shiksha Shodh Manthan Vol. No.-2, Octuber.
4. कपिल, एच.के. (1995). ''सांख्यकी के मूलतत्व'' आगरा, हर प्रसाद बुक हाउस।
5. मिश्र, जी. कुमार. (1998). ''शिक्षा कोश'' नई दिल्ली, यूनीवर्सिटी पब्लिकेशन।
6. पाठक, पी.डी. (1998). ''भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याऐं'', आगरा, विनोद पुस्तक भण्डार।
7. राय, पी.एन. (1996). ''अनुसंधान परिचय'', आगरा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।

8. राजवंशी, डॉ. अजुला. (2017). शोध मथन हिन्दी जर्नल पत्रिका वोल्यूम–8, नं0–3 सितम्बर।
9. शर्मा, आर.के. (1999). ''शिक्षा अनुसंधान'' मेरठ, इण्टर नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
10. सक्सैना, आर.एन. एवं मिश्रा, बी.के. (1998). ''अध्यापक शिक्षा मेरठ, सूर्या पब्लिकेशन।
11. Charles, M. C. (1964). "A Science Methodology relation among Indian children" The Journal of Educatinal research Voll 57, No. 05 Janaury 1964.
12. Somdhi, T. S. "A comparative study of the personality patters of student of religious and secular institution" Unpuplished Ph.d. Thesis Agra Uniersity Agra.
13. विश्वकर्मा, विजय प्रताप. ए जरनल ऑफ एजूकेशन नया शिक्षक।